मोदी का नया झुनझुना-अगले ओलम्पिक में पदक

अभी रियो न ओलम्पिक खेलों में देश के खेल मंत्री और अधिकारियों के कारनामों की कालिख धुली भी नहीं है कि महान जुमलेबाज प्रधानमंत्री ने एक नया झुनझुना थमा दिया है कि देशवासी अगले तीन ओलम्पिक खेलों में पदक लाने की तैयारी में जुट जायें। इन महाशय से कोई पूछे कि पिछले ढाई साल से तो आप सत्ता में थे तो इस दौरान ओलम्पिक की तैयारियों से आपको कौन रोक रहा था। कुछ नये प्रोत्साहन तो दूर आपके अधिकारियों और मन्त्रियों ने तो खिलाड़ियों की दुर्दशा करने और अपनी मौजमस्ती के पिछले सारे रिकार्ड ही तोड़ दिये।

एक तरफ़ आपके खेल मंत्री थे जो सारे नियम कायदों को तोड़कर सेल्फ़ी लेने में इतने मस्त थे कि अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक कमेटी को उन्हें चेतावनी देनी पड़ी कि अगर आपने अपनी ये मटरगश्ती बन्द नहीं की तो आपको उठाकर रियो से बाहर फ़ेंक दिया जायेगा। उधर भारतीय ओलम्पिक कमेटी के उपाध्यक्ष त्रिलोचन जी थे जिन्होंने अपने रेडियोलॉजिस्ट बेटे को सारे नियम कायदे तोड़कर, चीफ़ मेडिकल ऑफ़िसर बना कर ओलम्पिक दल के साथ मौज मस्ती के लिये भेज दिया। बताया जाता है कि इन महाशय को दवाई के नाम पर 'कोम्बीफ्लेम' के अलावा कोई नाम नहीं पता था और उसकी भी बताने की जरूरत तब पड़ती जब ये किसी को मिलते। ये महाशय तो ज़्यादातर पूल साईड में बैठकर जल परियों को निहारने में व्यस्त रहे और दारू पीने के लिये शाम होने का इन्तज़ार करना भी उन्हें दुश्वार लगता था इसलिये दो तीन बजे से ही ये शुरू हो जाते थे।

भारत सरकार ने इस घटना की जांच के तो आदेश दे दिये हैं लेकिन दोषियों पर कोई कार्रवाई नहीं होगी यह निश्चित है। क्योंकि जब सारे अधिकारी भेजे ही सिफ़ारिशी लग्गूओं-भगुओं के गये हों तो वो मौज मस्ती ही करेंगे, खिलाड़ियों का ध्यान थोड़े ही रखेंगे। अगर आपने कार्रवाई करनी है तो सबसे पहले भारतीय ओलम्पिक कमेटी के उप प्रधान त्रिलोचन सिंह को अन्दर करो, सारी कमेटी को भंग करो, जिम्मेदार खेल अधिकारियों को बर्खास्त करो और फ़िर जांच करते रहना।

आपको बता दें कि हमारे फ़ेंकू प्रधानमंत्री का एक जुलाई 2013 का, जब वो प्रधानमंत्री बनने के चक्कर में रैलियां कर रहे थे ओर उनमें एक से एक लम्बी फेंककर जनता को मूर्ख बना रहे थे, विडियो अभी सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। इस विडियो में पुणे में भाषण देते हुये महाराज कह रहे हैं कि क्या इतना बड़ा देश एक मेडल नहीं ला सकता; सरकार चाहे और तैयारियां करवाये तो पांच, सात, दस पदक तो ओलम्पिक में हमारे सेना के नये जवान ही ले आयेंगे। दस तो गये भाड़ में, पिछली बार के छः से भी नीचे फिसलकर हम दो पर ही आ टिके। साहब इन दो सालों में कुछ तो तैयारियां करवा देते-सेना की ही सही। क्योंकि आपको और किसी पर तो भरोसा वैसे भी कभी नहीं रहा। पुलिस-फ़ौज के सहारे ही अपने सारे काम निपटाने के आप आदी रहे हो।

पिछले अंक में हम आपको बता ही चुके हैं कि किस तरह ओलम्पिक में जाने वाली हमारी खिलाड़ियों-दीपा करमाकर, दत्तु कुमारी आदि की आवश्यक जरूरतों को भी पूरा नहीं किया गया-जैसे कि फ़िजियो थेरेपिस्ट साथ भेजना आदि और सारे अधिकारी हवाई जहाजों में सबसे महंगी क्लास में गये जबकि खिलाड़ी सबसे सस्ती सीटों पर मरते पड़ते भेजे गये। अब मेराथन (42 किलोमीटर) ओ.पी जैसा ने बताया कि कैसे उन्हें दौड के दौरान भारतीय अधिकारियों ने पीने का पानी व शक्ति दायक पेय उपलब्ध नहीं करवाये। बता दें कि मैराथन के दौरान खिलाड़ियों को पानी और एनर्जी ड्रिंक पीने की छूट होती है और इसके लिये हर आठ किलोमीटर पर ओलम्पिक कमेटी की तरफ़ से इन्तजाम होता है तो हर चार किलोमीटर पर उस देश का स्वयं का इन्तजाम होता है। जैशा ने बताया कि हर चार किलोमीटर पर बने भारतीय झण्डे वाले स्टाल पर ना तो कोई पेय पदार्थ उपलब्ध था ना कोई भारतीय खेल अधिकारी। दूसरे की टेबल से पानी उठाकर पीने से आपको दौड़ से बाहर किया जा सकता है। भारतीय खेल अधिकारियों के इस निर्लज्ज निकम्मेपन की वजह से धाविका जैसा ने मुश्किल से दौड़ पूरी की और उसके तुरन्त बाद पानी की कमी की वजह से वह बेहोश हो गई और उन्हें दो घण्टे बाद होश आया। अब भारत आने पर बैगलुर में उनका पानी की कमी का इलाज चल रहा है। इस बीच उनको स्वाईन फ़्लू होने की भी खबर है।

भारत सरकार ने इस घटना की जांच के तो आदेश दे दिये हैं लेकिन दोषियों पर कोई कार्रवाई नहीं होगी यह निश्चित है। क्योंकि जब सारे अधिकारी भेजे ही सिफ़ारिशी लग्गूओं-भगुओं के गये हों तो वो मौज मस्ती ही करेंगे, खिलाड़ियों का ध्यान थोड़े ही रखेंगे। अगर आपने कार्रवाई करनी है तो सबसे पहले भारतीय ओलम्पिक कमेटी के उप प्रधान त्रिलोचन सिंह को अन्दर करो, सारी कमेटी को भंग करो, जिम्मेदार खेल अधिकारियों को बर्खास्त करो और फ़िर जांच करते रहना।

इधर पदक लाने वाली दोनों खिलाड़ियों पर धन की वर्षा हो रही है। साथ ही सारे राजनेता सरकारी खर्चे पर वाहवाही लूटने पर लगे हैं। कल तक सरकार से छोटे-छोटे कुछ हजार के खर्चे के लिये भी याचना करने वाले इन विजेताओं पर करोड़ों रुपये बरस रहे हैं। एक मोटे अनुमान के अनुसार पी.वी. सन्धु को अब तक लगभग 13 करोड़ रुपये देने की घोषणा हो चुकी हैं तो साक्षी मलिक को छः करोड़। ध्यान रहे कि ओलम्पिक में जाने से पहले सन्धु पर खेल विभाग का किया गया खर्चा 15 लाख रुपये से भी कम था तो साक्षी पर सिर्फ़ 5-6 लाख रुपये के बीच। यानी आप अच्छे खिलाड़ी तैयार करने के लिये खर्चा तो कुछ मत करो लेकिन कोई अगर अपनी मेहनत और खर्चे से कहीं जीत जाये और पदक ले आये तो उसकी वाहवाही आप लूट लो वह भी सरकारी खर्चे पर। और उसे पैसे से इतना लाद दो कि आगे वो खेलने व पदक लाने की जरूरत ही महसूस ना करे।

अभी आई एक रिपोर्ट के अनुसार जीते हुये खिलाड़ियों को नकद इनाम देने में भारत और सिंगापुर सबसे आगे हैं जबकि खेल सुविधायें विकसित करने में भारत सबसे फिसड्डी। यही कारण है कि कोई खेल मन्त्री और खेल विभाग न होने पर भी अमेरिका ओलम्पिक पदक तालिका में सबसे ऊपर है। जबकि भारत के यू.पी. के आगरा ज़िले की खबर है कि सरकार द्वारा खेलों के लिये आबंटित राशि से हर बच्चे के हिस्से साल में सिर्फ़ 30 पैसे आते हैं जिससे एक टाफ़ी भी नहीं खरीदी जा सकती। यह सिर्फ़ उत्तर प्रदेश की नहीं पूरे हिन्दुस्तान की कहानी है। हम हमारी टीमों और खिलाड़ियों की जीत के लिये मन्नतें मांगते हैं, लाखों रुपये मन्दिरों में चढ़ाते हैं, टोटके व हवन जैसे पाखंड करते हैं लेकिन खेल सुविधायें के विकास के लिये कुछ हज़ार रुपये भी नहीं खर्च करते।

हरियाणा की जनता को भी चाहिये की हमारे करोड़ों रुपये अपनी वाहवाही के लिये लुटाने वाले खट्टरों और विजों को जनता लतियाये, गरियाये और मांग करे कि सरकार खेलों के कामकाज को सुधारे। वरना जुमलेबाजियों से कोई मेडल नहीं मिलने वाले।

-अजातशत्रु

वोट के बदले प्रवचन सुनिए...टूटी सड़क पर चलिए

-वाई. के. रज्जन

धर्म का सबसे भ्रष्ट और घिनौना रूप अगर देखना है तो हरियाणा में चले आइए। चार दिन पहले एक संत को हरियाणा विधानसभा के अंदर बुलाया जाता है। राज्यपाल और विधानसभा अध्यक्ष से भी ऊंचे आसन पर उनको बैठाया जाता है। वहां से बैठकर वो सदन को संबोधित करते हैं। सारे राजनीतिक दलों के विधायक, सीएम, नेता विपक्ष, स्टाफ सभी उनको टकटकी लगाकर सुनते हैं। ये संत जी जैन परंपरा के हिसाब से हमेशा नग्न अवस्था में रहते हैं।

40 मिनट में जैन मुनि तरुण सागर इन लोगों को बताते हैं कि राजनीति पर धर्म का अंकुश जरूरी है। धर्म पति की तरह है और राजनीति पत्नी की तरह। जिस तरह पत्नी अपने पति की हर बात को अनुशासन में रहकर मानने को बाध्य होती है, उसी तरह अंकुश होने पर राजनीति भी धर्म की हर बात मानने को बाध्य होगी। हर पत्नी का धर्म है कि वो पति के अनुशासन को माने। अगर राजनीति पर धर्म का अंकुश नहीं होगा तो वो मदमस्त हाथी की तरह नियंत्रण से बाहर हो जाएगी। उन्होंने अपराध बढ़ने की वजह भ्रुण हत्या को बताया। इसके लिए उन्होंने सुझाव दे डाला कि जिनके घर बेटी न हो, उनके यहां समाज रिश्ता ही न करे। फिर उन्होंने सीएम मनोहर लाल खट्टर की तरफ देखा, जो अविवाहित हैं। फिर कहा कि इस सारे मामले में खट्टर जी फिट नहीं बैठते।...शुक्र है जैन मुनि ने प्रधानमंत्री मोदी को इस मौके पर याद नहीं किया...

पाकिस्तान, अफगानिस्तान, इस्लामिक स्टेट आदि देशों में अलकायदा, तालिबान जैसे धर्मान्ध संगठन भी तो राजनीति को धर्म के अधीन करके चलाना चाहते हैं।

हरियाणा या देश की किसी भी विधानसभा में आज तक कोई भी संत, मौलवी, पीर, फकीर, साधू, महात्मा जनता के चुने हुए नुमाइंदों को संबोधित करने नहीं पहुंचा। यहां तक मोदी के धर्मगुरु, जिनका अभी हाल ही में निधन हुआ, वेटिकन के पोप जो यहां आ चुके हैं, मक्का के शाही इमाम और किसी शंकराचार्य को किसी भी विधानसभा या लोकसभा में जाकर संबोधित करने का मौका नहीं मिला। लेकिन खट्टर ने विधानसभा की गरिमा ताक पर रखकर जैन मुनि का बेहूदा प्रवचन सुनने के लिए उन्हें बुला भेजा।

बीजेपी पहले भी सत्ता में आ चुकी है और पिछली बार वो उस अयोध्या कांड के बाद आई थी, जब आरएसएस के कारसेवकों ने बाबरी मस्जिद को गिरा दिया था। लेकिन तब भी बीजेपी ने ऐसी हिमाकत नहीं की कि किसी शंकराचार्य को संसद में बुलाकर उससे सदन को संबोधित करा देते। लेकिन खट्टर ने तो सारी सीमाएं तोड़ दीं।

लगता है देश में पढ़े लिखे लोगों की कमी है। सिर्फ दो चर्चित लोगों की आवाज जैन मुनि के प्रवचन के खिलाफ उठी लेकिन उसे बेरहमी से दबा दिया गया।

बेचारा डडलानी

विशाल डडलानी बॉलिवुड के अच्छे म्यूजिक डायरेक्टरों में जाने जाते हैं। वो खुलकर दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल और उनकी पार्टी का समर्थन करते हैं। वो अक्सर तमाम विषयों पर खुलकर अपनी राय रखते रहे हैं। उन्होंने जैन मुनि के प्रवचन के खिलाफ ट्वीट किया और कहा कि ये बाबा जी क्या उल्टा-सीधा बके जा रहे हैं। डडलानी ने पब्लिक से कहा कि आप लोगों ने अगर इन्हें (बीजेपी) वोट दिया है तो ऐसी बेवकूफी भरी बातों को सुनने के जिम्मेदार हैं।...नो अच्छे दिन...जस्ट कच्छे दिन....

डडलानी का ट्वीट आते ही मानों आफत आ गई। उन्हें बीजेपी और संघियों ने ट्ववीटर, फेसबुक और तमाम सोशल मीडिया साइट्स पर घेर लिया। उनकी जमकर खिल्ली उड़ाई गई। डडलानी डर गया। उसने 33 बार माफी मांगी और अपना ट्वीट वापस ले लिया।...लेकिन आम आदमी पार्टी से भी संबंध तोड़ने की घोषणा भी की, जिसने इस मुश्किल घड़ी में उसका साथ नहीं दिया। मजेदार बात ये रही कि केजरीवाल और उनके हेल्थ मिनिस्टर सत्येंद्र जैन ने जैन संत से माफी मांगी और कहा कि डडलानी को माफ कर दें। जैन मुनि ने डडलानी को माफ भी कर दिया।

जैन मुनि के खिलाफ कांग्रेस नेता और उद्योगपति तहसीन पूनावाला ने भी बोला। उन्होंने भी जैन मुनि के प्रवचन पर कहा कि बीजेपी को वोट देने वालों पर तरस आता है कि उनके चुने हुए नुमाइंदों को बाबा लोग प्रवचन झाड़ रहे हैं और धर्म के तहत काम करने को कह रहे हैं।

संघियों ने फौरन अंबाला में डडलानी व पूनावाला के खिलाफ एफआईआर दर्ज करा दी। दिल्ली में भी पुलिस से शिकायत देकर रिपोर्ट दर्ज करने को कहा गया।

खतरनाक हालात

डडलानी हालांकि अपनी बात से पीछे हट गए लेकिन उन्होंने जिस तरफ इशारा किया था, वो बहुत खतरनाक स्थिति है और देश की जनता को जानना चाहिए।...आखिर हम लोग किसी भी पार्टी को क्यों वोट देते हैं...हम ऐसे घटिया प्रवचन सुनने के लिए अपने जनप्रतिनिधियों को संसद या विधानसभा में नहीं भेजते।...हम उन्हें भेजते हैं कि वे जाकर देश, समाज को आगे बढ़ाने के लिए काम करें...लोगों की समस्याएं हल करें...नए कानून बनाएं जिससे तमाम कुरीतियों से छुटकारा पाया जा सके लेकिन वहां क्या हो रहा है...वहां एक बाबा आकर बताता है कि राजनीति तो धर्म की पत्नी है।...धर्म का अंकुश राजनीति पर होना चाहिए लेकिन बाबा ने यह नहीं बताया कि राजनीति का यह पति हिन्दू, इस्लाम, ईसाई, सिख आदि में से कौन सा धर्म होगा। बाबा लोगों की यह पुरानी आकांक्षा इस तरह फूट कर सामने आई है कि उन्हें लग रहा है कि ये सपना अगर मोदी राज में नहीं पूरा हुआ तो कभी पूरा नहीं होगा।

श्री श्री की हरकत

एक श्री श्री रविशंकर हैं जिन्हें रामदेव के बाद दूसरा बड़ा ठग बताया जाता है। खबरों के मुताबिक मोदी ने कश्मीर पर बने एक कोरग्रुप में उन्हें अपना दूत बनाया है। कश्मीर में अभी पिछले दिन जिस बुरहानी वानी के नाम पर पूरा राज्य उबल रहा था। उसी बुरहान वानी के पिता अपना इलाज कराने बैंगलुरु गए थे। वहां श्री श्री ने उनको अपने आश्रम में बुलवाया और फोटो खिंचवाकर दलाल मीडिया में जारी कर दिया। खबर ये छपवाई गई कि श्री श्री कश्मीर समस्या सुलझाने में जुटे हैं। लेकिन अगले दिन बुरहान वानी के पिता ने श्री श्री की असलियत खोल दी। ये वही श्री श्री है जिसने यमुना के किनारे एक फर्जी सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित कर यमुना नदी के पर्यावरण को खराब कर दिया था। इस कार्यक्रम में मोदी भी गए थे। नैशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल ने श्री श्री पर जुर्माना किया जिसे भरने में उसने आनाकानी की।

डेरा सच्चा सौदा को 50 लाख क्यों

हरियाणा के खेल मंत्री अनिल विज जिन्हें बड़ा ईमानदार, तेजतर्रार और अगला सीएम दावेदार बताया जाता है। वो गत सप्ताह पहले सिरसा में डेरा सच्चा सौदा में गए। वहां वो इतने खुश हुए कि डेरा चलाने वाले कथित गुरु गुरमीत रामरहीम सिंह को 50 लाख रुपये हरियाणा सरकार की ओर से दिए। ये बाबा भी कम बड़ा फ्रॉडी नहीं है। इस पर सिरसा के एक पत्रकार की हत्या और लड़कियों के यौन शोषण का आरोप है। कोर्ट में मुकदमा भी चल रहा है।

अब विज से कोई पूछ सकता है कि भाई आपने ये पैसे क्यों और क्या समझकर डेरा सच्चा सौदा को दिए जो एक धार्मिक स्थान है। विज वही शख्स है जिसने रामदेव को हरियाणा का ब्रैंड एंबैसडर बनवाया हुआ है।

काला-सफेद का चक्कर

कहा जा रहा है कि राजनीतिक लोग अब बैंकों में पैसा रखने की बजाया अपनी ब्लैक मनी इन बाबाओं को दे देते हैं जो इन्हें पूरे मुनाफे के साथ वापस कर देते हैं। रामदेव के मामले में ये आरोप तो खुलेआम लग रहे हैं। रामदेव कुछ प्रॉपर्टी डीलरों की सलाह पर विभिन्न शहरों में जमीन खरीदने की घोषणा करता है, फिर उस जगह के रेट बढ़ जाते हैं। मुनाफा रामदेव और डीलर मिलकर खा लेते हैं। बताया जाता है कि कुछ डीलरों ने रामदेव के जड़ी बूटी के धंधे में भी पैसा लगया हुआ है। रामदेव की कंपनी में बने तमाम प्रोडक्टस घटिया साबित हो रहे हैं लेकिन दलाल मीडिया में आपको उसके खिलाफ कोई खबर पढ़ने या देखने को नहीं मिलेगी।

...ये घटनाएं बताती हैं कि मौजूदा बीजेपी सरकार किस तरह तमाम तरह के फ्रॉड बाबाओं के जाल में उलझती जा रही है। जिस जनता ने उसे वोट देकर भेजा था, उसे भूलकर पूरी सरकार बाबाओं के चंगुल में कैद हो गई है। चाहे वो केंद्र की हो या हरियाणा जैसी सरकार हो, सभी जगह इन बाबाओं का राज है। हरियाणा में बीजेपी सरकार बने हुए दो साल से ज्यादा होने को हैं, अगर फरीदाबाद या दूसरों जिलों में जनता को कोई बदलाव नजर आया हो तो बताए....फरीदाबाद के सड़कों की हालत पहले से बदतर हो चुकी है। नगर निगम इतना कंगाल है कि अपने स्टाफ को सैलरी देने की हालत में नहीं है। गुड़गांव में बारिश के बाद जो जाम लगता है, उसके बारे में सभी जानते हैं। रोहतक, भिवानी, हिसार, फरीदाबाद, गुड़गांव में बीजेपी नेताओं और मंत्रियों के जो मॉल बन रहे हैं, अगर उसे ही विकास माना जाए तो जरूर हरियाणा विकास कर रहा है, वरना जैन मुनि के प्रवचन से अब तो गुजारा करने का समय आ चुका है।...खाली पेट प्रवचन सुनिए वो चाहे जैन मुनि का हो या फिर मन की बात हो...मस्त रहिए। वोट के बदले प्रवचन का इनाम...जनता को मुबारक।